6 न्याय

इस कहानी में चातुर्य की बात है। एक मित्र यात्रा पर जाते वक्त अपनी सोनामोहरें मित्र के यहाँ तेल के डिब्बे में छूपा के जाता है। यात्रा से वापस आने पर उसे अपनी मोहरें नहीं मिलती। वह काजी से फ़रियाद करता है। अंत में हसन नाम का एक लड़का अपनी चतुराई से सच्चा न्याय करके अली ख्वाज़ा को मोहरें वापस दिलवाता है।

यह रोचक कहानी न्याय और बुद्धिमत्ता की एक झलक देती है।

पुराने ज़माने में ईराक की राजधानी बगदाद में एक व्यापारी रहता था, नाम था उसका, अली ख्वाज़ा। व्यापार करते-करते जब उसके पास एक हज़ार सोने की मोहरें इकट्ठी हो गईं, तो उसने मक्का शरीफ़ की यात्रा का निश्चय किया। चूँकि वह अकेला रहता था, उसने अपनी जमा पूँजी अपने मित्र के यहाँ रखने का निश्चय किया। यात्रा के खर्च के लिए उसने पाँच सौ मोहरें अलग रख लीं। फिर एक घड़े में बची हुई मोहरें डालकर तेल भर दिया। अली ख्वाज़ा पड़ोस में अपने मित्र वाज़िद के घर गया। उसको अपनी यात्रा के बारे में बताया और कहा, 'यह तेल का घड़ा मैं आपके घर रखकर जाना चाहता हूँ। मक्का से लौटकर ले लूँगा।' वाज़िद ने अपने तहखाने की चाबी उसे देते हुए कहा कि, ''आप अपना घड़ा तहखाने में रख आइए और जब आप लौटें तो उसी स्थान से ले लीजिए।'' अली ख्वाजा घड़ा रखकर यात्रा के लिए निकल गया।

एक दिन वाज़िद के घर दावत थी। तरह-तरह के पकवान बनाते हुए तेल खत्म हो गया। रात का समय था। वाज़िद की बीवी अपना सिर खुजलाने लगी। तभी उसे अली ख्वाज़ा के तेल के घड़े की याद आई। उसने वाज़िद से कहा, ''आप तहखाने में रखे तेल के घड़े से थोड़ा तेल निकाल लाइए। इस समय बाज़ार तो बंद हैं। कल सुबह बाज़ार से नया तेल लाकर घड़े में भर देंगे। ख्वाज़ा आज रात ही आकर तो तेल नहीं माँगेंगे।''

बीवी की बात सुनकर वाज़िद तहखाने में गया। जब घड़े की सील खोलकर तेल निकालने लगा तब घड़े में से सिक्कों की आवाज़ आई। उसे लगा कि घड़े में तेल के नीचे कुछ है। इसलिए उसने दूसरे बर्तन

में सारा तेल निकाल लिया। उसने देखा कि घड़े में तो पाँच सौ सोने की मोहरें थीं। उसने उन मोहरों को अपनी तिजोरी में छिपाकर रख दिया और तेल लाकर बीवी को दे दिया। अगले दिन उसने बाज़ार से नया तेल लेकर घड़े में भर दिया। उसे वैसे ही सीलबंद कर दिया जैसे कि ख्वाज़ा अली ने किया था।

कुछ दिनों के बाद ख्वाज़ा मक्का की यात्रा से वापस आया। घर में अपना सामान रखकर वह सीधा वाज़िद के घर गया और अपनी यात्रा की सारी बातें बताईं। फिर तेल का घड़ा लेकर वह घर आ गया। जब उसने घड़े का तेल निकालकर देखा तो उसके पैरों तले ज़मीन ही खिसक गई। वह सिर पकड़ कर बैठ गया, क्योंकि घड़े में एक भी सोने की मोहर नहीं थी। वह सोचने लगा, अब क्या किया जाए?

वह उलटे पाँव वाज़िद के घर गया और अपनी मोहरें माँगने लगा। वाज़िद ने कहा कि, ''सीलबंद तेल का घड़ा आपको उसी स्थान से मिला जहाँ आप रखकर गए थे। मैंने तो उसे हाथ भी नहीं लगाया। मैं कैसे मान लूँ कि उसमें सोने की मोहरें थीं।'' दोनों मित्रों में कहा-सुनी होने लगी। दोनों का झगड़ा सुनकर आस-पास के लोग इकट्ठे हो गए। उन्होंने जब झगड़े को बढ़ते हुए देखा तो ख्वाज़ा से कहा कि, ''आप काज़ी की अदालत में जाइए। वह ही आपके झगड़े को मिटा सकता है।''

ख्वाज़ा ने काज़ी की अदालत में अपनी बात रखी परंतु पक्के सबूतों के अभाव में उसे वहाँ से निराश लौटना पड़ा। तब उसने बगदाद के खलीफ़ा के यहाँ अपील की और न्याय माँगा। खलीफ़ा ने उसकी अपील स्वीकार कर ली। खलीफ़ा ने सारे मामले पर विचार करने के लिए कुछ समय चाहा। एक सप्ताह बाद का समय सुनवाई के लिए दिया गया। ख्वाज़ा और वाज़िद का किस्सा अब प्रख्यात हो गया था।

खलीफ़ा एक दिन अपना भेष बदलकर शहर में घूम रहे थे। तभी उन्होंने कुछ लड़कों को न्यायालय का खेल खेलते हुए देखा। वह छिपकर उनका खेल देखने लगे। उन्हें लगा कि जो लड़का न्यायाधीश बना है, बड़ा समझदार है। वह जिस तरह न्याय कर रहा है, बिलकुल

ठीक है। इसलिए उन्होंने उस लड़के को अपने पास बुलाया और उसका नाम पूछा। लड़के ने कहा, ''मेरा नाम हसन है।'' खलीफ़ा ने कहा, ''मैंने तुम्हारा खेल देखा। तुम बहुत समझदार हो। कल हमारे दरबार में आना।''

अगले दिन खलीफ़ा के दरबार में अली ख्वाज़ा, वाज़िद और हसन उपस्थित हुए। खलीफ़ा ने हसन से कहा कि, ''तुम इन दोनों के झगड़े का किस्सा सुनो और बताओ कि इनमें से कौन सच बोल रहा है?''

हसन ने दोनों की बातें ध्यान से सुनीं। फिर उसने दो तेलियों को बुलवाया। थोड़ी देर में दो तेली आ गए। हसन ने उनसे कहा, ''आप इस घड़े के तेल की जाँच कीजिए और बताइए, इस घड़े में तेल कितना पुराना है?''

दोनों तेलियों ने बारी-बारी से तेल को देखा, सूँघा और चखा। फिर अपना निर्णय दिया। ''घड़े का तेल दो महीने पुराना लगता है, इससे ज़्यादा नहीं'', वे बोले।

तेलियों की बात सुनकर वाज़िद तो घबरा गया। अली ख्वाज़ा खुश होकर बोल पड़ा, ''हुज़ूर, मैं तो छः महीने पहले मक्का की यात्रा करने गया था। तभी मैंने तेल खरीदा था।'' तेलियों और अली ख्वाज़ा की बात सुनकर सब को वास्तविकता का ज्ञान हो गया। खलीफ़ा को न्याय के लिए सबूत मिल गया था। खलीफ़ा ने हसन को धन्यवाद दिया और वाज़िद से कहा कि, ''आपने अली ख्वाज़ा के घड़े से तेल और मोहरें निकाली हैं। आप उन्हें वापिस कीजिए और चोरी और विश्वासघात के अपराध की सजा भुगतिए।'' खलिफ़ा ने हसन को बहुत सारा पुरस्कार दिया।

खलीफ़ा के दरबार में उपस्थित सभी लोगों ने हसन की सूझ-बूझ और न्याय की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

शब्दार्थ

अपील निवेदन **अभाव** कमी **जाँच** तपास **तहखाना** जमीन के नीचे बना कमरा **तेली** तेल निकालनेवाला **पुरस्कार** इनाम **भूरि-भूरि** खूब सारी **मोहर** सिक्का **वास्तविकता** सच्चाई **विश्वासघात** धोखा देना **सबूत** किसी बात को सिद्ध करने का प्रमाण **सज़ा भोगना** दंड भोगना **सूझ-बूझ** समझदारी

मुहावरे

सिर खुज़लाना सोचना, समझ न पाना कि क्या किया जाए **पैरों तले जमीन खिसक जाना** आघात लगना **कहा-सुनी होना** बातों की लड़ाई होना **सिर पकड़कर बैठ जाना** हताश होना, निराश होना

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) अली ख्वाज़ा ने मोहरें तेल में क्यों छुपाई होंगी?

(2) मित्र के साथ हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए?

(3) वाज़िद और हसन की जगह आप होते तो क्या करते?

प्रश्न 2. नीचे लिखे संदर्भ में कहानी के पात्रों के संवाद कक्षा में बुलवाइए :

(1) अली ख्वाज़ा और वाज़िद (जब अली ख्वाज़ा तेल का घड़ा रखने आया)

(2) अली ख्वाज़ा और वाज़िद का झगड़ा

प्रश्न 3. हसन ने क्या सूझ-बूझ दिखाई थी, कक्षा में चर्चा कीजिए और लिखिए।

स्वाध्याय

B9R2T2

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) वाज़िद को कैसे पता चला कि बर्तन में मोहरें हैं?

(2) अली ख्वाज़ा और वाज़िद के बीच झगड़ा क्यों हुआ?

(3) खलीफ़ा ने हसन को अपने दरबार में क्यों बुलाया?

(4) तेलियों की बात सुनकर वाज़िद क्यों घबराया?

(5) तेलियों ने कैसे सच्चा निर्णय किया?

(6) वास्तविकता जानने पर खलीफ़ा ने क्या निर्णय किया?

प्रश्न 2. निम्नलिखित वाक्य कौन किसे कहता है, लिखिए :

(1) यह तेल का घड़ा मैं आपके घर रखकर जाना चाहता हूँ।

(2) आप अपना घड़ा तहखाने में रख आइए।

(3) आप काज़ी की अदालत में जाइए।

(4) आप इस घड़े की जाँच कीजिए।

(5) हुज़ूर, मैं तो छः महीने पहले मक्का की यात्रा करने गया था।

प्रश्न 3. (क) आपने किए हुए प्रवास का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

(ख) क्या तुम्हारे साथ भी कभी कोई ऐसी घटना घटी है कि तुम्हें न्याय के लिए किसी के पास जाना पड़ा हो? उस घटना को विस्तार से लिखिए।

(ग) कहानी की प्रमुख घटनाओं को इस क्रम में लिखो कि पूरी कहानी स्पष्ट हो सके, जैसे–

- ईराक में व्यापारी अली ख्वाज़ा के पास एक हजार सोने की मुहरें इकट्ठा होना।
- ....
- ....
- ....
- ....
- ....
- ....

प्रश्न 4. निम्नांकित कहानी के चित्र एवं वाक्य उलट-पुलटकर दिए गए हैं, उसको पढ़कर कहानी का निर्माण कीजिए और उचित शीर्षक दीजिए :

शेर की नींद खुल गयी और उसने गुस्से से चूहे को पंजे में पकड़ लिया। चूहा रोते-रोते बोला, ''कृपा करके मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।''

जाल में फँसते ही शेर दहाड़ने लगा। उसकी दहाड़ सुनकर चूहा वहाँ आया। शेर को जाल में फँसा देखकर अपने साथियों को बुलाकर चूहे ने शेर को जाल से छुड़ाया।

एक दिन जंगल में एक शेर आराम से सो रहा था। शेर जहाँ सो रहा था उसके पास एक बिल था। जिसमें एक चूहा रहता था।

शेर को चूहे और उसके साथियों ने जाल से छुड़ाया और शिकारी से बचाया। उस दिन से शेर और चूहा मित्र बन गये। साथ में खेलने लगे।

शेर को सोया हुआ देखकर चूहा उसके पास गया। वह शेर के शरीर पर चढ़ा और नाचने लगा।

एक दिन एक शिकारी जंगल में शिकार करने आया। उसने सिंह का शिकार करने के लिए जाल बिछाया।

प्रश्न 5. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियावाचक शब्द ढूँढ़कर उदाहरण अनुसार वाक्य फिर से लिखिए :

उदाहरण : • राधा ने संजीव को पत्र लिखा।

➡ राधा ने किसको पत्र लिखा ?

(1) अध्यापक ने बच्चों को कहानी सुनाई।

(2) रात को कुत्ते भौंक रहे थे।

(3) वह पटाखे देख रहा है।

(4) वेदांत किताब पढ़ रहा था।

(5) पता नहीं तन्मय मेरे पास से कब चला गया।

(6) आकाश में पतंग उड़ रही थी।

प्रश्न 6. कहानी पढ़िए, उचित शीर्षक दीजिए एवं चर्चा करके प्रश्नों का निर्माण कीजिए तथा उत्तर लिखिए :

एक बार राजा कृष्णदेवराय के महल में एक सेवक काँच का खूबसूरत मोर साफ कर रहा था। गलती से उसके हाथ से मोर गिरकर टूट गया। राजा को वह मोर बहुत प्रिय था। जब राजा महल में आए, उन्हें अपना प्रिय मोर दिखाई न दिया। पूछने पर पता चला कि वह टूट गया है। क्रोध में आकर उन्होंने सेवक को छः महीने के लिए कारागार में डलवा दिया।

कुछ दिनों बाद राजा कृष्णदेवराय, मंत्री तेनालीराम और दूसरे दरबारियों के साथ राजा उद्यान में घूमने निकले। तेनालीराम बोले, "महाराज, पास ही बाल उद्यान है। उसे भी देखते चलें।"

राजा कृष्णदेवराय बाल उद्यान की ओर आए। उद्यान में तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूल खिले हुए थे। एक स्थान पर बच्चे नाटक खेल रहे थे। एक बच्चा राजा बना हुआ था। उसके सामने दो

सिपाही एक अपराधी को पकड़कर खड़े थे। खेत के मालिक ने शिकायत की, ''महाराज, आज यह मेरे खेत से गाजर और मूली उखाड़कर ले गया।'' सुनकर राजा बने बच्चे ने चोरी करनेवाले से पूछा। उसने गलती मान ली तब वह बोला, ''ठीक है, तुम्हें माफी दी जाती है पर ध्यान रखना कि दोबारा यह गलती न हो।'' फिर खेत के मालिक से कहा, ''तुम्हारे नुकसान की भरपाई शाही खज़ाने से की जाएगी पर पहली गलती पर भला हम कैसे सजा दें।''

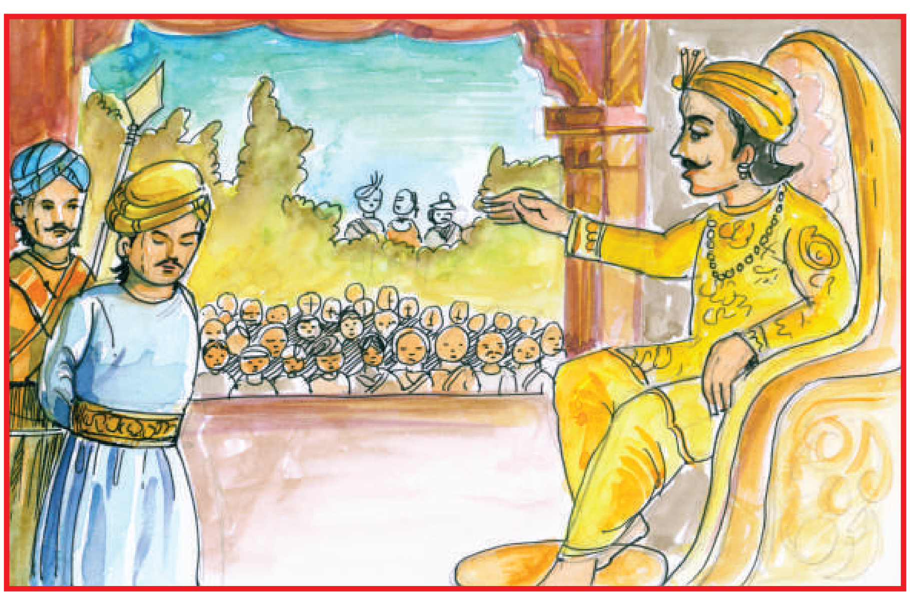

नाटक देखने के बाद मंत्री ने कहा, ''महाराज, यह बच्चा तो बड़ा शरारती है। इसे सज़ा मिलनी चाहिए।'' तेनालीराम बोले, ''हाँ महाराज, मेरे विचार से सज़ा यही हो कि इसे राज दरबार में बुलाकर यह नाटक फिर से दोहराने को कहा जाए।''

नाटक देखकर राजा कृष्णदेवराय सोच में पड़ गए। तेनालीराम की चतुराई पर वे मन-ही-मन मुस्कुरा उठे। यह देखकर मंत्री असमंजस में पड़ गए। उसके बाद राजा कृष्णदेवराय बोले, ''सचमुच तेनालीराम, तुमने ठीक कहा। आज मैं समझा कि न्याय करते समय राजा का मन बच्चे जैसा निर्मल होना चाहिए।''

अगले ही दिन राजा ने उस सेवक को रिहा करवा दिया।

योग्यता विस्तार

- ऐसी अन्य कहानियाँ पुस्तकालय में जाकर पढ़िए।
- बीरबल की चतुराई, पंचतंत्र की कहानियाँ, अरेबियन नाईट्स जैसे कहानी संग्रह पढ़िए।
- इस कहानी का नाट्यीकरण कीजिए।